RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अगस्त 2022

बाल विज्ञान पत्रिका, अगस्त 2022

चकमक



मूल्य ₹50

भारतीय मेंढकों के बरसाती तराने

रोहन चक्रवर्ती

क्रीऽया-क्रोड़ाऽ-क्रीऽया-क्रोड़ाऽ क्रीया-क्रोडा



भारतीय साँड मेंढक

टिकिटिकिटिकिटिकटिक!



सामान्य कुलांच मेंढक

बर्र्रम्प! बर्र्रम्प!



कबरा कलुआ मेंढक

टिटिक-टिटिक-टिटिक



कोदृिगेहारा नाचने वाला मेंढक

पैंम्प! पैंम्प! पैंम्प!



मुख्तलिफ मेंढक

क्रोऊऽवा!



जोग रात का मेंढक

ट्रीऽऽ-टिंक-टिंक-टिंक



पीली झाड़ियों वाला मेंढक

पिहीऽउव्व-पिप्-पिप्-पिप्!



कैम्फोले रात का मेंढक



अनुवाद: विनता विश्वनाथन

अंक 431 ● अगस्त 2022

चकमक





इस बार

भारतीय मेंढकों के बरसाती तराने – रोहन चक्रवर्ती 2
टोटके की मुर्गी – ब्रजेश वर्मा 4
भूलभुलैया 9
क्या पानी भी जाति देखता है?– तृप्ति पाठक 10
महिला गणितज्ञ – भाग 3 – आलोका कान्हेरे 12
तुम भी जानो 15
डॉक्टर पाउडरपिल – कोर्नेई चुकोव्स्की 16
जुगनू संकट में... 20
पतंग की बादल पूँछ – शिवकुमार गांधी 22
क्यों-क्यों 24
अन्तर ढूँढो 27
गणित है मज़ेदार – सकीना की जादुई..– विश्वनाथ, मणिकंडन 28
मेरा पन्ना 32
माथापच्ची 38
चित्रपहेली 40
तुम भी जानो 43
बादल की मुर्गी – प्रभात 44



सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सम्पादन सहयोग
सीमा

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

आवरण: शिवांगी

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine



ब्रजेश वर्मा

चित्र: मयूख घोष

टोटके की मुर्गी

रवि चुपचाप अपने साथियों के पीछे-पीछे मैदान की ओर जा रहा था। मैदान पर जाते वक्त वो हमेशा पीछे ही चलता है। लेकिन मैदान पर खेलते वक्त उसके पैरों में बिजली-सी फुर्ती आ जाती है। तब उसका मुकाबला कर पाना किसी के बस की बात नहीं होती। मैदान पर फुटबॉल को सबसे ज़्यादा वो ही नचाता है और सबसे ज़्यादा गोल भी वो ही मारता है। फुटबॉल रवि का पसन्दीदा खेल है।

रवि की माँ पत्थर की खदान पर अलंगे तोड़ने का काम करती हैं। बंजारा समुदाय की अधिकांश महिलाएँ पत्थर तोड़ने का ही काम करती हैं। बंजारों को बड़ी-बड़ी चट्टानों से अलग-अलग साइज़ के अलंगे काटने में महारथ हासिल होती है। रवि भी अपनी माँ के साथ पत्थर तोड़ने जाता है। घन (हथौड़ा) चलाते समय जब माँ थक जातीं और आराम करने के लिए रुकतीं तो रवि हथौड़ा चलाता। जब वो पत्थर तोड़ रहा होता तब उसमें मैदान जितनी ही फुर्ती होती। फीस जमा करने के लिए वह महीने में तीन-चार दिन काम करने जाता है। बंजारों की बस्ती में रवि अकेला लड़का है जो बारहवीं कक्षा में पहुँचा है। उसकी उम्र के अधिकांश लड़के खदान पर काम करने जाते हैं।

स्कूल में बंजारा समुदाय का वह अकेला लड़का है। और स्कूल में अजय उसका एकमात्र दोस्त है जो उसे अपने साथ रखता। क्लास के बाकी लड़के हमेशा उसका मज़ाक उड़ाते। वे कभी उसके फटे जूतों को लेकर तो कभी उसके कपड़ों को लेकर छींटाकसी करते। अपना मज़ाक उड़ाए जाने पर उसे गुस्सा तो बहुत आता। लेकिन वो कोई जवाब नहीं देता। अपने गुस्से को वह मैदान पर गोल पे गोल दागकर निकालता। लड़कों को जवाब देने का उसका यही तरीका था।

उसकी क्लास के लड़के हर रविवार को सुबह-सुबह फुटबॉल खेलने जाते हैं। वह भी उनके साथ खेलने जाता है। उस रात बहुत बारिश हुई थी जिस कारण मैदान की ओर जाने वाले कच्चे रास्ते में कीचड़ हो गया था। कीचड़ से सने हुए रास्ते पर सभी बहुत सँभल-सँभलकर चल रहे थे। सभी लड़के रवि से काफी आगे निकल चुके थे। रवि हरे-भरे पेड़ों को निहारते हुए मैदान की ओर बढ़ रहा था। उसे पेड़ों के साथ रहना बहुत अच्छा लगता है। बारिश से धुली हुई पत्तियाँ साफ और चमकदार दिख रही थीं। सभी पेड़ नहाए हुए-से लग रहे थे।

पेड़ों को देखते हुए उसकी नज़र बेर के पेड़ पर बैठी काले रंग की मुर्गी पर पड़ी। बस्ती से इतनी दूर काली मुर्गी देखकर उसे थोड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन साथ ही साथ ढेर सारी खुशी भी हुई। रात भर बारिश में भीगने की वजह से मुर्गी एकदम शान्त बैठी हुई थी। मुर्गी ने भी बेर का पेड़ शायद इसलिए चुना था कि उसे कोई पकड़ न सके। लेकिन रवि रोज़ ही अपने दोस्तों के साथ इन काँटे वाले पेड़ों से बेर तोड़ने आता था। ये काँटे उसको मुर्गी तक पहुँचने से रोक नहीं सकते थे। उसने सभी दोस्तों को मैदान जाने दिया और खुद पेड़ के नीचे ही रुक गया।

रवि ने सोचा आज तो इसी मुर्गी की दावत उड़ाएँगे। उसे अब शाम के खाने की थाली में मुर्गी की सब्ज़ी दिखाई देने लगी। यह सब सोचकर उसके मुँह में मुर्गी का स्वाद आने लगा। जिस दिन घर में मुर्गी पकती है उस दिन वह दो रोटी ज़्यादा ही खाता है। उसी स्वाद का अनुभव करते हुए काँटों से बचते हुए वह झट-से बेर के पेड़ पर चढ़ गया। मुर्गी भी रात भर बारिश में भीगी थी। इसलिए उसने भी ज़्यादा दौड़-भाग नहीं की और आसानी से रवि के हाथ आ गई। ऐसा लगा जैसे वो खुद ही पकड़ाना चाहती हो।

मुर्गी पकड़कर रवि की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। पर जब उसने मुर्गी के सिर पर टोटके का

टीका लगा हुआ देखा तो उसकी खुशी छूमन्तर हो गई। वह थोड़ा डर गया। रवि के गाँव तरफ लोग अपनी कोई खास मन्नत पूरी होने के लिए किसी खास स्थान पर भेंट चढ़ाते हैं। भेंट स्वरूप लोग मुर्गी, बकरा या पाड़ा (बोदा) की पूजा करते हैं और उसे किसी निर्जन स्थान पर छोड़ देते हैं। लोगों को लगता है कि इस भेंट से प्रसन्न होकर वो दैवीय शक्ति उनकी मनोकामना पूरी कर देगी जिसकी वे पूजा करते हैं। कई बार लोगों की मन्नतें पूरी हो जाती हैं और कई बार नहीं भी होतीं। सच में मन्नत पूरी होने की क्या वजह होती है इसके बारे में पक्केपन से कोई कुछ नहीं जानता।

इस मुर्गी को भी किसी ने टोटका करके छोड़ दिया था। इस मुर्गी को छूने से रवि को मन ही मन डर लगने लगा कि उसके साथ कहीं कोई अपशकुन न हो जाए। उसने टोटके की मुर्गी के बारे में अपने नाना जी से सुना था। नाना जी बोलते हैं कि टोटके की मुर्गी घर लाने से अमंगल होता है। एक पल के लिए उसके मन में विचार आया कि मुर्गी को वहीं



छोड़कर मैदान पर चला जाए। उसे यह भी मालूम था कि माँ इस टोटके की मुर्गी को पकाने के लिए कतई राज़ी नहीं होंगी।

उसने सोचा, "माँ तो रास्ते में पड़े हुए हल्दी-कुमकुम लगे निम्बू पर गलती से भी मेरा पैर पड़ जाने पर ही कितना डर जाती हैं। और बुरी बलाओं और अपशकुन से बचाने के लिए मन्दिर ले जाकर प्रसाद चढ़ाती हैं और दान देती हैं। यदि उसे पता चल जाए कि मैं टोटके की मुर्गी लेकर आया हूँ तो वह पूरा घर सर पर उठा लेगी।"

एक तरफ उसे टोटके की मुर्गी का डर सता रहा था वहीं दूसरी तरफ मुर्गी का स्वाद उसे बेचैन भी कर रहा था। इसी उहापोह में मुर्गी पकड़े वह बहुत देर तक वहीं खड़ा रहा। बहुत देर सोच-विचार के बाद उसने तय किया कि कुछ भी हो जाए वो इस मुर्गी को घर लेकर ही जाएगा। आखिरकार डर के ऊपर स्वाद की जीत हुई। इस तरह अब मुर्गी का भविष्य तो तय हो गया था। उसने यह भी तय किया कि वह मुर्गी के बारे में किसी को कुछ नहीं बताएगा।

रवि ने चुपचाप मुर्गी को अपने कुरते में छुपाया और सरपट घर की ओर भागा। मुर्गी को ले जाकर उसने घर के पीछे के आँगन में डलिया के नीचे छुपा दिया। उसे खाने के लिए ज्वार के दाने दिए और एक कटोरी में पानी भी रख दिया। ठण्ड से बचाने के लिए उसने मुर्गी पर चादर भी लपेट दी। चादर की गर्मी पाकर मुर्गी भी डलिया के नीचे एकदम शान्त बैठी रही। आज वह माँ को आँगन की तरफ जाने का कोई भी मौका नहीं दे रहा था। आँगन की तरफ के सारे काम वही कर रहा था। दिन भर वो घर पर ही रहा।

शाम होने पर वह भागकर अपने दोस्त मोनू को बुला लाया जो चिकन की दुकान पर मुर्गी साफ करने का काम करता है। घर से थोड़ी दूर ले जाकर मोनू ने पलक झपकते ही मुर्गी काटकर साफ कर दी। रवि ने मुर्गी का कुछ हिस्सा अपने दोस्त को भी दिया। दोस्त भी खुश और रवि भी खुश। टोटके की मुर्गी अब पकने के लिए तैयार थी।

रवि ने कटी हुई मुर्गी ले जाकर माँ को दी। रवि अक्सर सलीम चाचा की दुकान से मुर्गी का मांस खरीदकर लाता था। माँ मुर्गी का मांस देखकर खुश हो गईं। बोलीं, "अरे! ये तो देशी मुर्गी है। बहुत दिन हो गए देशी मुर्गी का स्वाद नहीं चखा।" माँ को मुर्गी पकड़ाकर रवि दौड़कर बाज़ार से अदरक, लहसुन, हरा धनिया, प्याज, खसखस, फल्ली दाना, चिकन मसाला और खड़ा मसाला ले आया।

माँ ने झटपट सब्ज़ी का सारा मसाला तैयार कर लिया। वो मुर्गी की सब्ज़ी के लिए मसाला सिलबट्टे पर ही पीसती हैं। उसके पापा मुर्गी बड़े शौक से पकाते हैं। सब्ज़ी का मसाला चूल्हे की धीमी-धीमी आँच पर पकने लगा। जैसे-जैसे मसाला पक रहा था उसकी खुशबू पूरे घर में फैल रही थी। जब मसाला अच्छी तरह से पक गया तो पापा ने मसाले में मुर्गी के पीस डालकर पकने के लिए छोड़ दिए। सब्ज़ी की यह खुशबू रवि को बार-बार रसोई की ओर खींच रही थी। थोड़ी-थोड़ी देर में वह रसोई में आता और पूछता, "पापा कितनी देर और लगेगी मुर्गी पकने में, मुझे बहुत ज़ोरों की भूख लग रही है।" पापा रवि की ओर देखकर धीरे-से मुस्करा देते। वो समझ जाता कि अभी मुर्गी पकने में थोड़ा समय और बाकी है।

पापा ने जैसे ही कढ़ाई चूल्हे से नीचे उतारी रवि जान गया कि टोटके की मुर्गी पेट में जाने के लिए तैयार हो चुकी है। वह झट-से अपनी थाली लेकर बैठ गया। पापा ने सभी की थाली में सब्ज़ी डाली। रवि को थोड़ी ज़्यादा दी। घर में रात का खाना सभी लोग एक साथ बैठकर खाते हैं। पहला निवाला खाते ही माँ बोलीं, "आज की मुर्गी तो कुछ ज़्यादा ही स्वादिष्ट लग रही है।" पापा ने भी

हामी भरी। रवि ने हल्की-सी आँख उठाकर एक नज़र माँ-पापा की ओर देखा और दूसरी नज़र थाली में रखी मुर्गी पर डाली। मुर्गी को लेकर उसके मन में अभी भी द्वन्द्व चल रहा था कि उसकी वजह से घर पर कोई विपत्ति न आ जाए। लेकिन फिर मुर्गी से जुड़ी सभी चिन्ताओं को दरकिनार कर उसने अपना सारा ध्यान सब्ज़ी पर केन्द्रित किया और पहला निवाला मुँह में डाला। सचमुच आज कि सब्ज़ी बहुत ही लज़ीज़ थी।

सभी ने मिलकर मज़ेदार दावत उड़ाई। माँ-पापा को तो मुर्गी के बारे में कुछ पता नहीं था। वे दिन भर के थके हुए थे तो खाना खाकर सो गए। थोड़ी देर में उसकी बहन भी सो गई। लेकिन रवि को अभी भी मुर्गी का डर सता रहा था। देर रात तक उसके मन में मुर्गी से जुड़े गलत-सलत खयाल आ रहे थे। इस कारण उसकी नींद भी उड़ गई थी। वो बिस्तर पर पड़ा-पड़ा सोच-विचार ही कर रहा था। लेटे-लेटे पता नहीं उसे कब नींद आई।

अगली सुबह रवि देर-से सोकर उठा। तब तक माँ-पापा काम पर निकल चुके थे। वह दिन भी हर दिन जैसा सामान्य दिन था। वह जल्दी से तैयार हुआ और अपनी बहन को लेकर स्कूल के लिए निकल गया। खुद से बोला, “टोटके की मुर्गी को घर लाना एकदम सही निर्णय था।” अपनी बहन का हाथ पकड़े वह मुस्कराते हुए स्कूल के अन्दर दाखिल हुआ। उस दिन उसके दिमाग से टोटके का भूत भी उतर गया था।

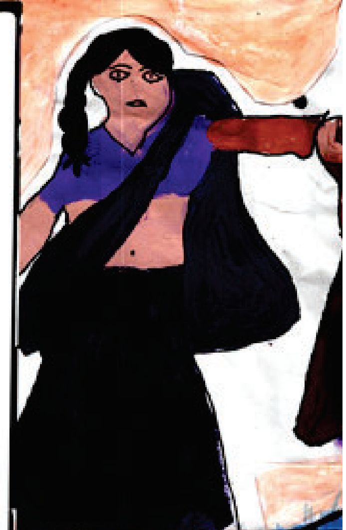






मैं अपने परिवार के साथ रायपुर की एक बस्ती में रहती हूँ। घर में पानी भरने का काम मैं ही करती हूँ। हमारे गली में एक नल है जहाँ से गली के सभी लोग पानी भरते हैं।

मेरे पानी भरने के बाद दूसरे लोग नल को हमेशा धोते हैं। इसीलिए क्योंकि वे हमें छुआ मानते हैं। एक बार जब मैंने पानी भरने के बाद पीछे मुड़कर देखा तो हमारी पड़ोसिन नल को इतना रगड़-रगड़कर धो रही थी कि नल ही टूट गया!



एक और बार इसी बात को लेकर एक महिला के साथ मेरा झगड़ा हो गया। वो 'नीच, नीच' बोलती गईं और उन्होंने हमारी बाल्टियों को फेंक दिया। मैंने फिर गुस्से में उनकी बाल्टी भी फेंक दी। माँ सुनकर घर से निकलीं तो उस महिला ने उनको 'नीच औरत' बुलाकर गाली दी। माँ का गुस्सा बढ़ गया। "बहुत दिन से सहती आ रही हूँ। अब नहीं सहूँगी," कहकर उन्होंने हल्के-से उनको धक्का दिया। उस महिला ने माँ के बालों को पकड़ा। माँ को मैं बचाने गई तो उस महिला ने मुझे डण्डे से मारा। मैंने भी वापिस उनको मारा तो उनका हाथ चूड़ियों से कट गया।





पुलिस थाने में उन्होंने हमारे खिलाफ शिकायत लिखवाई। उनको केवल हाथ पर चोट लगी थी लेकिन पुलिस वाले ने पूरे बदन में चोट आई करके लिखा। माँ के सिर और बाएँ हाथ पर चोट लगी थी लेकिन उन्होंने इन चोटों का तो लिखा ही नहीं। हमने भी शिकायत लिखवाने की कोशिश की। पुलिस ने लिखने से ही मना कर दिया।

उलटा उस महिला ने मुझ पर ही केस डाला और मुझे बच्चों के कोर्ट में जाना पड़ा। सब लोग माँ को डराने लगे कि अगर हम पैसा नहीं दे पाते हैं तो मुझे बच्चों के जेल में डाल देंगे। माँ ने कर्जा करके कैसे तो भी मेरे नाम से फिर पैसे पटा दिए।





मैंने स्कूल में बाबासाहेब डॉ आम्बेडकर के महाड के आन्दोलन के बारे में पढ़ा था।

उस दिन हम बच्चों के कोर्ट से लौट रहे थे, मैंने उनके इस आन्दोलन को बहुत याद किया और इससे मुझे ताकत मिली।

क्या पानी भी जाति देखता है?

तृप्ति पाठक
सातवीं, पहले शहीद स्कूल में
अब अडवाणी ओरेलिन्कों गवर्मेंट मिडिल स्कूल
रायपुर, छत्तीसगढ़

पानी के कारण बस्ती में बहुत लड़ाइयाँ होती हैं। बस्ती के चारों ओर कम्पनी व कारखाने हैं। इनके चलते पानी की कमी बहुत होती है। साथ ही जो पानी आता है वो बहुत खराब हो चुका है – केमिकल आदि के कारण। नगर निगम से जो नल का पानी आता है वो इतना गन्दा होता है कि उसमें नहाने का भी मन नहीं करता है। उसमें अक्सर कीड़े-मकौड़े होते हैं और उसमें बहुत बदबू (नाले जैसी) आती है।

बस्ती के ज़्यादातर लोगों के पास घर में नल कनेक्शन नहीं रहता है। हर गली में एक नल होता है जिससे सभी भरते हैं। इसके चलते काफी लड़ाइयाँ होती हैं। पानी भरने का काम ज़्यादातर महिलाएँ व लड़कियाँ ही करती हैं। पीने के साफ पानी के लिए अक्सर महिलाओं को दो-तीन किलोमीटर पैदल चलकर जाना पड़ता है और पानी सिर पे रखकर लाना पड़ता है।

लेकिन पानी भरने के काम में मेरे लिए सबसे ज़्यादा मुश्किल रहा है – जातिगत भेदभाव और छुआछूत का सामना करना। हाल ही में इसके चलते मैंने एक महिला से लड़ लिया जिसके चलते मुझे बच्चों के जेल जाने की नौबत तक आ गई, मगर मैं बच गई। यह चित्र इस घटना को दर्शाता है। और ये घटना इस पानी की लड़ाई को जाति के विनाश के संघर्ष से जोड़ती है।

पिछले अंक में हमने दो महिला गणितज्ञों
सोफिया कोवालेवसक्या और एमी नोथर से तुम्हारी मुलाकात कराई थी।
महिला गणितज्ञों की इस शृंखला में मैं इस बार तुम्हें
कैथरिन जॉनसन से मिलवाती हूँ...




इन सब दिक्कतों के बावजूद कैथरिन ने स्कूल और कॉलेज में सफलता पाई और वेस्ट वर्जिनिया विश्वविद्यालय से पीएचडी की।
इस विश्वविद्यालय में स्नातक पढ़ाई करने वाली वह पहली अफ्रीकी-अमेरिकन महिला थीं।
कैथरिन, अब तू नौवीं में आ गई है। तेरा स्कूल छोड़ने का समय भी आ गया है।
लेकिन मैम, मैं उन सबसे बेहतर हूँ।
वेस्ट वर्जिनिया विश्वविद्यालय
कैथरिन ने राष्ट्रीय वैमानिकी सलाहकार समिति (NACA) में काम करना शुरू किया। वहाँ पर वह पश्चिमी क्षेत्र संगणना विभाग में काम करती थीं। यह अफ्रीकी-अमेरिकन महिलाओं का एक समूह था जो अन्तरिक्ष कार्यक्रम के इंजीनियर के लिए पेचीदा गणनाएँ करता था।
इस समूह ने जाँच के आँकड़ों का विश्लेषण और गणितीय संगणनाएँ कीं। इन महिलाओं को 'वेस्ट कम्प्यूटर्स' का खिताब दिया गया था और इनका काम अन्तरिक्ष कार्यक्रम के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण था।
इसके बावजूद...
!!
गोरों का वॉशरूम इस्तेमाल करने के लिए मुझे दोबारा जुर्माना भरना पड़ा।
...उन्हें अलग शौचालय और कैंटीन इस्तेमाल करना पड़ता था। NACA को NASA (राष्ट्रीय वैमानिकी और अन्तरिक्ष प्रबन्धन) में शामिल करने के बाद ही इन अनुचित व्यवहारों पर रोक लगाई गई।


अपने कार्यकाल में कैथरिन ने NASA के कई अन्तरिक्ष कार्यक्रमों में मदद की। सन 1961 के बुध ग्रह कार्यक्रम में उन्होंने अहम भूमिका निभाई। उन्होंने 'फ्रीडम 7' नामक अन्तरिक्ष यान का मार्ग तय किया। फ्रीडम 7 ने अन्तरिक्ष में पहले अमरीकी को पहुँचाया। कैथरिन अपोलो 11 टीम की भी सदस्य थीं जिसने मनुष्यों को पहली बार चाँद पर उतारा।
कैथरिन जॉनसन
सीनियर साइंटिस्ट
NASA
फ्रीडम 7
अगले अंक में जारी...

तुम भी जानो



कायनात की पहली तस्वीरें

25 दिसम्बर 2021 को अन्तरिक्ष का सबसे बड़ा टेलीस्कोप – जेम्स वैब टेलीस्कोप – स्थापित हुआ। इससे अपेक्षा थी कि ये इतनी दूर की तस्वीरें खींच सके कि कायनात के चार हज़ार छह सौ करोड़ साल पहले के दृश्य हम देख सकें। यह इसलिए सम्भव है क्योंकि प्रकाश को इतनी दूर से हम तक पहुँचने में इतने साल लगते हैं। साथ ही ये उम्मीद भी है कि इस टेलीस्कोप से हम ग्रहों के वायुमण्डलों के रसायनों तक का आकलन लगा पाएँगे। इससे हमें पृथ्वी पर बैठे-बैठे पता चल सकता है कि उनमें जीवों की सम्भावना है या नहीं।

ईंट का जवाब... रेत



यूक्रेन में घूसकर रूस लगभग 6 महीनों से युद्ध लड़ रहा है। इस मामले में रूस के एक अन्य पड़ोसी फिनलैंड ने यूक्रेन के पक्ष में बोला है। रूस फिनलैंड के ईंधन का प्रमुख स्रोत है और जवाब में उसने फिनलैंड को ईंधन देना बन्द कर दिया है। लेकिन ऐसा लगता है कि हाल ही में हुआ एक आविष्कार फिनलैंड को बचा सकता है।

हवा और सौर ऊर्जा से बनी सस्ती बिजली द्वारा गोदाम में भरी सौ टन रेत को उन्होंने गर्म कर रखा है। इस रेत की 'बैटरी' में ऊर्जा तीन महीनों तक रह जाती है और इस दौरान कभी भी इस्तेमाल हो सकती है।



डॉक्टर पाउडरपिल

कहानी: कौर्नेई चुकोव्स्की

चित्र: वी सुतेयेव



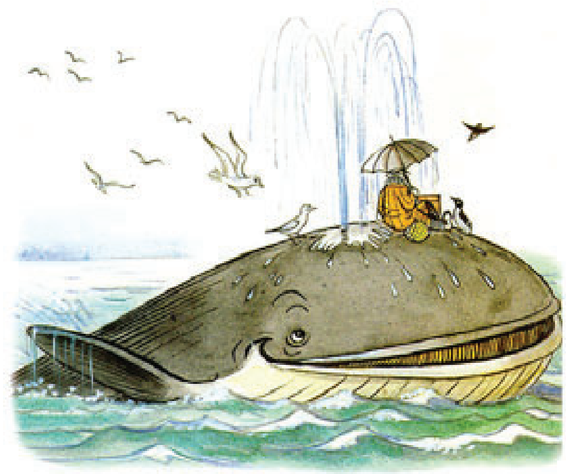


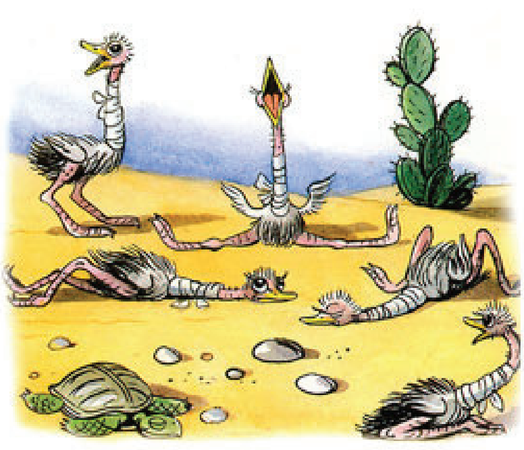
















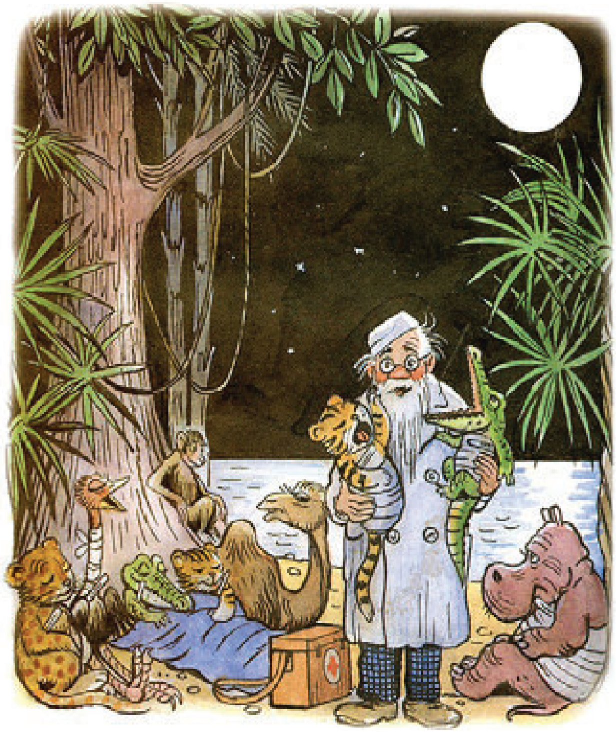


















जुगनू अपनी टिमटिमाती रोशनी के लिए जाने जाते हैं। लेकिन लगता है कि हमारी भावी पीढ़ियाँ जुगनू देखने से वंचित रह जाएँगी। विशेषज्ञों का कहना है कि जुगनू की आबादी को प्रभावित करने वाले दो प्रमुख कारक कीटनाशकों का उपयोग और बढ़ता प्रकाश प्रदूषण है।

चिन्ताजनक बात यह भी है कि तेज़ी-से शहरीकरण के कारण दलदली भूमि के सिकुड़ने से जुगनुओं का आवास समाप्त हो गया है। जुगनू का जीवनकाल कुछ ही हफ्तों का होता है। वे गर्म, आर्द्र क्षेत्रों से प्यार करते हैं और नदियों और तालाबों के पास दलदलों, जंगलों और खेतों में पनपते हैं। स्वच्छ वातावरण की तलाश में और मच्छरों द्वारा फैलने वाली बीमारियों से निपटने के लिए लोगों ने दलदलों को नष्ट कर दिया है और फलस्वरूप जुगनू के लिए अनुकूल माहौल नष्ट हो गया है। यदि इन कारकों को नियंत्रित नहीं किया गया, तो अन्ततः जुगनू विलुप्त हो जाएँगे।

कृत्रिम रोशनी का असर

बता दें कि जुगनू प्रकाश संकेतों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। उनकी प्रजनन गतिविधियाँ एक विशेष समय के लिए सीमित होती है। कृत्रिम प्रकाश की वजह से वे भटक जाते हैं। इससे उनके अन्धे होने का भी डर बना रहता है। दुनिया भर में कृत्रिम प्रकाश बढ़ा है, जिस वजह से इनकी संख्या घट रही है।

2018 के एक अध्ययन के मुताबिक, चीन और ताइवान के कुछ हिस्सों में पाए जाने वाली एक्वाटिका फिक्टा प्रजाति के जुगनुओं में रोशनी के अलग-अलग पैटर्न देखे गए हैं। इसकी वजह कृत्रिम प्रकाश है। इस वजह से साथी को खोजने की उनकी सम्भावना कम हुई है। प्रजनन के मौसम में जुगनू अपने प्रकाश के विशेष पैटर्न से एक-दूसरे को आकर्षित करते हैं। लेकिन कृत्रिम प्रकाश की वजह से जुगनुओं को अपने साथी को आकर्षित करने के लिए ज़्यादा ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है।

हाल में किए गए एक अध्ययन में यह खुलासा हुआ है कि भारत में कृत्रिम रोशनी जुगनुओं के प्रजनन पर असर डाल रही है। यह अध्ययन दुनिया भर में प्रकाश प्रदूषण के कारण बढ़ते पर्यावरणीय खतरों के प्रति सचेत करता है। आँकड़े बताते हैं कि पिछले तीस वर्षों में जुगनुओं की संख्या में भारी गिरावट देखी गई है। नेशनल सेंटर फॉर कोस्टल रिसर्च के शोधकर्ताओं ने आन्ध्र प्रदेश में एब्सकॉन्डिटा चाइनेंसिस प्रजाति के जुगनुओं की आबादी को रिकॉर्ड करने का प्रयास किया है। उनके शोध के मुताबिक, 2019 में बरनकुला गाँव में दस वर्ग मीटर क्षेत्र में जुगनुओं की संख्या औसतन दस से बीस पाई गई जबकि 1996 में यह संख्या पाँच सौ से ज़्यादा थी।

गौरतलब है कि देश में जुगनुओं पर अब तक बेहद कम अध्ययन किए गए हैं। ऐसे में इनकी लगातार घटती आबादी पर अंकुश लगाने को लेकर विशेष ध्यान नहीं दिया जा सका।

कृत्रिम रोशनी और अन्य जीव-जन्तु

दरअसल, रात के समय में पड़ने वाली कृत्रिम रोशनी ने जीव-जन्तुओं के जीवन को खासा प्रभावित किया है। आधुनिक ब्रॉड-स्पेक्ट्रम प्रकाश व्यवस्था इन्सानों को रात में अधिक आसानी से रंगों को देखने में सक्षम बनाती है। लेकिन ये आधुनिक प्रकाश स्रोत अन्य जीव-जन्तुओं की दृष्टि पर बहुत ज़्यादा नकारात्मक प्रभाव डालते है। इसके पीछे की वजह यह है कि मानव दृष्टि के लिए डिज़ाइन की गई कृत्रिम रोशनी में नीली और पराबैंगनी श्रेणियों का अभाव होता है, जो इन कीटों की रंगों को देखने की दृष्टि क्षमता के निर्धारण में अहम है। यह स्थिति कई परिस्थितियों में किसी भी रंग को देखने की कीटों की क्षमता को अवरुद्ध कर देती है।

पिछले कुछ वर्षों में कृत्रिम रोशनी के हस्तक्षेप के चलते न केवल जुगनुओं बल्कि सभी प्रकार के जीव-जन्तुओं पर प्रभाव पड़ा है। यह देखा गया है कि पूरी दुनिया में रात के समय में प्रकाश व्यवस्था का स्वरूप पिछले करीब बीस वर्षों में नाटकीय रूप से बदला है। एलईडी जैसे विविध प्रकार के आधुनिक रोशनी उपकरणों का चलन बढ़ा है। लेकिन हमें यह समझना होगा कि कृत्रिम प्रकाश से होने वाला प्रदूषण समस्त वातावरण को प्रदूषित करता है। प्रकाश प्रदूषण अमूमन पारिस्थितिकी तन्त्र को बाधित करता है। कृत्रिम प्रकाश की तीव्रता बेचैनी को बढ़ा देती है और मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था को दुरुस्त करके न केवल हम कीटों पर पड़ने वाले विनाशी प्रभाव को कम कर सकते हैं, बल्कि हमारे अपने स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों से भी बच सकते हैं।

स्रोत फीचर्स से साभार



पतंग की बादल पूँछ

शिवकुमार गांधी

चित्र: तविशा सिंह

हवा का एक हल्का झोंका, मेरे बालों को थोड़ा उड़ाया। फिर हवा का थोड़ा ज़्यादा बड़ा झोंका इतना कि पेड़ के पत्तों को ज़ोर-से हिलाया। हवा-हवा, झोंका-झोंका, पत्ते और बाल।

तभी शिबू ज़ोर-से चिल्लाए, "अरे! देखो, देखो चाबी जा रही है।"

शिबू का चश्मा नाक से सरककर थोड़ा नीचे आ गया, जिसे सँभालने उन्होंने चेहरा ऊपर किया और ऊपर हुई उनकी दाढ़ी भी हवा में उड़ने लगी।

"चाबी? जा रही है? कहाँ?" मैंने कहा।

"वो देखो बादल, सामने एक बड़े बादल के दाईं ओर लम्बा-छोटा टुकड़ा, बिलकुल चाबी जैसा।

"अरे! लीनी वो देखो," शिबू आँखें सिकोड़कर बोले।

मैंने कहा, "चाबी तो मुझे नहीं दिख रही। पर शिबू तुम्हारी बात अच्छी लग रही है।"

मैंने बादलों को फिर से देखा। और खेल में शामिल हो गई।

मैंने कहा, "तो बड़ा बादल फिर ताला होगा।"

अब शिबू हँसे। बोले, "चाबी बनानेवाला होगा।" मैंने कहा, "फिर ताला कहाँ होगा?"

"चाबीवाला चाबी लेकर कोई ताला खोलने जाता होगा।" शिबू बोले।

"पर ताला कहाँ होगा?" मैंने पूछा

शिबू बोले, "ज़मीन पर किसी कुएँ या तालाब में होगा।"

मैंने पूछा, "शिबू तुमने यह कैसे देखा?"

शिबू ने मेरी ओर देखा और देखते और सोचते रहे। फिर आसमान की तरफ मुड़कर बोले, "अब देखो वह बादल का टुकड़ा चाबी जैसा नहीं रहा।"

मैंने कहा, "अब तो वह पतंग की पूँछ जैसा लग रहा है, और बड़ा बादल पतंग। और बाकी सारा आसमान।"



शिबू ने तपाक-से बोला, “अरे! यह तुमने कैसे देखा?” और हम दोनों हँसे, खुलकर हँसे। जैसे कि मुँह के ताले को किसी हँसी की चाबी ने खोल दिया हो।

मैंने कहा, “तो चाबी पतंग की होगी। और पतंग ताला होगा। चाबीवाला पतंग ढूँढने निकला होगा। और पतंग के मिलते ही चाबी लगा दी होगी। अब वो आसमान में उड़ रही होगी और पतंग को कोई तालाब दिख रहा होगा।”

शिबू बोले, “क्या पता उस तालाब के पास हम खड़े हों जिसके ताले को चाबीवाले ने चुपके-से खोल दिया हो।”

हम फिर खुलकर हँसे। बिन चाबी हँसे।

फिर हम जाने को उठे। मैं शिबू के कन्धे पर चढ़ गई और शिबू धीरे-धीरे चलने लगे।

चलते हुए हवा में हम दोनों उड़ते-से हमें ही दिखने लगे।



क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

कौन-सा गाना सुनकर तुम अच्छा महसूस करते हो, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।



चित्र: नन्दिनी धुमाल, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मुझे कोयल का गाना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि वो गाते वक्त बहुत अच्छा सुर लगाती है। और बहुत अच्छे-से कुहू-कुहू करती है।

नन्दिनी धुमाल, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मुझे तमिल गाना 'सिगा पन्ने...' बहुत पसन्द है। यह गाना ए आर रहमान जी ने गाया है। यह गाना मुझे इसलिए पसन्द है क्योंकि इसमें लड़कियों के बारे में बताया गया है। यह मेरे मनपसन्द हीरो विजय की फिल्म है। जब मैं इस गाने को सुनती हूँ तो मेरे चेहरे पर मुस्कराहट आ जाती है।

धनलक्ष्मी, सातवीं, के के अकैडमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

'लुकाछिपी बहुत हुई...' मुझे ये गाना बहुत पसन्द है क्योंकि इस गाने में एक माँ की दर्द भरी फीलिंग है। और इस गाने को सुनता हूँ तो आँखों से आँसू आने लगते हैं।

भुवनेश्वर, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

अगले अंक के लिए सवाल है—

कहते हैं कि कम रोशनी में पढ़ने से आँखें खराब हो जाती हैं? क्या यह सही है, और क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश



चित्र: राजेश्वरी भिरंगी, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

बचपन में मेरे पापा ने मुझे एक पुराना गाना सुनाया था और फिल्म भी दिखाई थी। फिल्म का नाम दोस्ती था। गाना था – 'चाहूँगा में तुझे साँझ-सवेरे।' फिल्म में और भी गाने थे। पर पापा को ये गाना बहुत पसन्द है। और जभी ये गाना टीवी में आता तो पापा सुनकर रोते और मुझे बताते कि ये फिल्म देखने में बहुत रोए थे। और हाँ मैं भी जभी ये गाना सुनती हूँ तो मुझे रोना आता है।

विद्या, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

'बाबा मेलो ककलेचा नाहीं, तुइया मनी वेदना
कशी मी राहू दूर कुठे जाऊ तुइया वेदना'

मुझे ये मराठी गाना पसन्द है। ये गाना इसलिए पसन्द है क्योंकि ये बहुत शान्त गाना है। और इसमें मेरे पसन्दीदा बाबा हैं। क्योंकि मुझे उनकी बहुत याद आती है।

राजेश्वरी भिरंगी, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

लता मंगेशकर जी का गाया गाना 'लग जा गले....' सुनकर मैं बहुत अच्छा महसूस करती हूँ। क्योंकि इस गाने को सुनकर लगता है कि आपका किसी भी व्यक्ति के साथ मनमुटाव हो तो मनमुटाव को दूर रखकर उससे जा गले मिलो। या मन भर की बातें कर लो। पता नहीं शायद इस जन्म में दुबारा मुलाकात हो या नहीं। इस गाने को जब मैं सुनती हूँ तो मुझे उस व्यक्ति की याद आती है जो हमें छोड़कर चला गया हो और लगता है कि अभी भी उसे कुछ करना, बातें करना बाकी रह गया हो।

तारणी सिन्हा, दसवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

'कुछ है जुनून-सा कुछ पागलपन है, सौ बातें करता ये बुद्धू-सा मन है' ये गाना ऐसा है जिसे सुनते मैं कभी नहीं थकती। जब भी कभी मन हज़ारों बकवास सवाल लिए मुझसे झगड़ता है मैं पैनिक होने के बदले उसे डाँट देती हूँ। "चुप बुद्धू-से मन" और मन मुँह फुलाए कहीं दूर अपने सवालों को लिए भाग जाता है।

इस गाने की जितनी तारीफ करी जाए उतनी ही कम है। इस गाने को सुनते-सुनते आप भले ही बूढ़े हो जाएँगे लेकिन आपका मन कभी बूढ़ा नहीं होगा। कभी कोई भयंकर से भयंकर गलती भी हो जाती है मुझसे तो मैं ये गाना सुन लेती हूँ। फिर न तो खुद पर गुस्सा आता है और ना ही किसी और पर। बस "होता है होता है, टेक अ चिल" कहकर मुस्करा देती हूँ। आप भी रख सकते हो इस गाने को अपने प्लेलिस्ट में। फिर आप भी थोड़ा 'कूल' साउंड करोगे।

निशा गुप्ता, किलकारी बिहार बाल भवन, सैदपुर, पटना, बिहार

मुझे 'जिन्दगी की यही रीत है', 'आशाएँ' और 'बिलीव' गाना सुनना बहुत पसन्द हैं। क्योंकि ये गाने मुझे उत्साहित करते हैं कि हम अपनी ज़िन्दगी में कुछ भी कर सकते हैं और हमें अपने ऊपर पूरा विश्वास करना चाहिए। और ये तीन गाने मुझे सकारात्मक सोचने पर मजबूर करते हैं। अगर हम सकारात्मक सोचेंगे तो हमारी जिन्दगी में सब सकारात्मक ही होगा। हारना-जीतना तो जिन्दगी का एक हिस्सा है तो हमें अपनी हार पर कभी भी उदास नहीं होना चाहिए। आगे दो गुना ज़्यादा मेहनत करनी चाहिए और हम एक दिन सफल हो जाएँगे।

डॉली चोकटे, दसवीं, एजुकेशन्स हब, देवास, मध्य प्रदेश

मुझे देशभक्ति गीत बहुत पसन्द हैं जैसे कि 'ऐ मेरे वतन के लोगों' और 'सन्देशे आते हैं'। मेरे बड़े नाना भारतीय फौज में थे जो अब रिटायर हो गए हैं। मेरे मामा भी फौज में हैं और हैदराबाद पोस्टेड हैं। मैं भी भारतीय सेना में शामिल होना चाहता हूँ। इसीलिए में रोज़ सुबह उठकर दौड़ लगाता हूँ। देशभक्ति गीत सुनकर मेरा हौंसला बढ़ जाता है।

श्यामजी पाण्डे, पाँचवीं, कम्पोजिट विद्यालय, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

'हर वक्त दिल मे तेरी मौजूदगी है, तू ही मोहब्बत मेरी तू मौसिकी है'

मुझे ये गाना बहुत पसन्द है। जब मेरी मम्मी मुझे मारती हैं तो मुझे सैड साँग सुनने का मन करता है।

शिका खातून, छठवीं, अपना तालीम घर, फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मुझे मोटिवेशन वाले गाने अच्छे लगते हैं। क्योंकि उन्हें सुनने के बाद अपने आप में एक अलग-सी ऊर्जा महसूस होती है। इस तरह के गानों को सुनने के बाद मुझे ऐसे लगता है कि मेरा लक्ष्य मेरे नज़दीक है। ऐसे गाने सुनने के बाद पढ़ाई में भी थोड़ा ज़्यादा ध्यान जाता है।

कोएना साहू, दसवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

जाने मेरी जानेमन
बचपन का प्यार मेरा
भूल नहीं जाना रे
जैसा मेरा प्यार है
जान तुझे किया है
बचपन का प्यार मेरा...

ये गाना मुझे बहुत पसन्द है। इसको सुनकर डान्स करने का मन करता है।

विजय, आठवीं, अपना तालीम घर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

पिछले साल मैं कक्षा 4 में था। हमारे स्कूल में प्रतिदिन लाइब्रेरी क्लास होती है। मेरे सर हम लोग को बहुत-से गीत सुनाते थे। उन गीतों में, 'हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए' और 'नदिया धीरे-धीरे बहना' मुझे बहुत पसन्द है। मेरे पापा ने हाल ही में एक पुराना मोबाइल (स्क्रीन टच) खरीदा है। मैंने यू-ट्यूब पर ढूँढकर ये दोनों गीत सुने। मुझे ये गीत बहुत अच्छे लगते हैं। ये दोनों गीत क्रमशः दुष्यन्त कुमार/प्रमोद जी ने लिखे हैं।

दीपक पाठक, पाँचवीं, कम्पोजिट विद्यालय धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

'फूलों का तारों का सबका कहना है....'
क्योंकि इस गाने में भाई है।

अमेया विक्रम सिंह, पहली, डीपीएस वाराणासी, उत्तर प्रदेश



अन्तर ढूँढो

इन दो चित्रों में दस से ज़्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?

चित्र: शुभम लखेरा





सकीना की जादुई करामात
विश्वनाथ, मणिकंडन
अनुवाद: विनता विश्वनाथन ; चित्र: मधुश्री
गणित है मज़ेदार
खाने की छुट्टी थी और सकीना, रामू, अब्दुल, शेखर, सेल्वी और फातिमा बीच क्लास में बैठे बतिया रहे थे। अचानक से सकीना ने कहा:
रामू, इस पर तीन अंकों की कोई संख्या लिखना तो।
तीन अंक बोले तो.. क्या उसमें शून्य भी हो सकते हैं?
कुछ भी, बस तीन अंक हों। पर मुझे वो संख्या बता मत देना!
ठीक है, अब क्या?
***
अब अब्दुल को कागज़ पकड़ा दे। अब्दुल, रामू ने जो संख्या लिखी है उसके बाजू में उसी संख्या को दोबारा लिखना। अब तेरे पास छह अंकों की एक संख्या होगी, है कि नहीं?
******
हैं।
तो चल शेखर को कागज़ पास कर।


शेखर तू छह अंकों वाली इस संख्या में 7 से भाग दे।
मज़ाक कर रही है क्या? किसी भी संख्या को बिना देखे-जाने उसे 7 से पूरी तरह भाग कैसे कर सकती है?
कोशिश तो कर!
ओके... अरे इसका भाग तो होता है! लेकिन बिना संख्या देखे तुझे कैसे पता चला?
फालतू की बातों के लिए अभी टाइम नहीं है! अपना जवाब तू सेल्वी को देना।
सेल्वी, इस संख्या को तू 11 से भाग करना और फातिमा को आंसर बताना।
सेल्वी ने केला खतम करके कागज़ और पैन लेकर देखा कि वाकई इस संख्या का 11 से भाग हो सकता है! अब बारी आई फातिमा की।



अब एक सवाल तुम्हारे लिए:

क्या तुम बता सकते हो कि सकीना ने क्या खेल खेला?

यहाँ लिखी गई बातों पर तुम्हें आँखें बन्द करके विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है। तुम खुद करके देखो। कोई भी तीन अंकों की संख्या लो और फिर जैसे सकीना ने कहा वैसे करके देखना। तुम्हें क्या मिला?



जून अंक के चमत्कारी गुफा लेख में दी गई पहेली का हल

कहानी की शुरुआत में बढ़ई के पास कितनी रकम होनी चाहिए?

जब बूढ़ा व्यक्ति गुफा से तीसरी बार बाहर आता है, उसके पास 200 रुपए होते हैं, है ना? चूँकि गुफा के अन्दर जाने के बाद पैसे दुगने हुए इसलिए गुफा के अन्दर जाने से पहले उसके पास 100 रुपए रहे होंगे। इस तरह उल्टा सोचते जाते हैं कि पिछला चरण कौन-सा था।

जब वह दूसरी बार गुफा से बाहर आया होगा तो उसके पर्स में 300 रुपए रहे होंगे क्योंकि इस रकम से बढ़ई ने 200 रुपए फीस के तौर पर बूढ़े व्यक्ति को दिए होंगे। बाकी बचे 100 रुपए। और इसी तरह एक चरण पहले जब वो दूसरी बार गुफा के अन्दर गया उसके पर्स में 150 रुपए रहे होंगे। इस हिसाब से पहली बार गुफा से बाहर आने पर उसके पास 350 रुपए रहे होंगे। और पहली बार गुफा में जाने से पहले पर्स में 175 रुपए रहे होंगे।



मतलब कहानी की शुरुआत में बढ़ई के पास 175 रुपए थे।



चित्र: जैस्मीन, दूसरी, राजकीय प्राथमिक पाठशाला, असीर, सिरसा, हरयाणा

बरसात में भीगना

रतन शुक्ल
ग्यारह साल
प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

बरसात का मौसम था। पानी खूब ज़ोर-से बरस रहा था। मेरा मन बार-बार भीगने को कर रहा था। परन्तु मुझे पता था कि माँ बाहर जाने नहीं देंगी क्योंकि बरसात के पानी में भीगने से सर्दी और बुखार हो जाता है। इसी बीच इन्वर्टर की बैटरी का पानी खतम हो गया। पापा बताए थे कि बैटरी वॉटर के लिए बरसात का पानी सबसे अच्छा होता है। इसलिए मैं एक टब लेकर छत पर चला गया। टब वहाँ रख दिया और जी भर बरसात में नहाया। नीचे लौटने पर थोड़ी डाँट पड़ी पर लेकिन शाम तक टब पानी से भर गया था। पानी छानकर मैंने बैटरी में भर दिया।

मेरी बिल्ली बुग्गी

यश यादव
सातवीं

बिल्ली मुझे बहुत पसन्द है और बिल्ली मेरे घर पर भी है। उसका नाम है बुग्गी। वह दूध पीती है और रोटी खाती है। ठण्ड के दिनों में वह मेरे साथ मेरे बिस्तर में सो जाती है। उसका एक भाई था। वो दोनों बहुत अच्छे-से रहते थे। पर उसका भाई एक्सीडेंट में मर गया। वह घूमने गया था तो गाड़ी के नीचे आ गया। और वहीं पर मर गया। जब से वो मरा है बिल्ली बहुत शान्त रहती है। अब वो बहुत सोती है। दोपहर में भी सोती है और रात में भी सोती है। जब से चूहे मार रही है तब से घर में शान्ति है। कुछ चीज़ें चूहे काट नहीं पाते। पहले बहुत चीज़ें काटते थे।



चित्र: दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल, वज़ीराबाद, दिल्ली

मेरी लॉकडाउन डायरी

आस्था
सातवीं
मंगलम पब्लिक स्कूल
महादेव, मण्डी
हिमाचल प्रदेश

लॉकडाउन में मुझे दो बातें बहुत अच्छी लगीं। एक, यह कि जब तक लॉकडाउन में छूट नहीं थी तब तक गाड़ियों का शोर बन्द रहा। हर तरफ शान्ति का माहौल था। यह समय बहुत अच्छा था। दूसरा, यह कि अब मैं और भैया हर समय मम्मा-पापा के साथ होते हैं। हमारा पूरा रुटीन ही बदल चुका है। अब हमें सुबह पहले की तरह जल्दी नहीं उठना पड़ता। ऑनलाइन क्लासेज़ भी शुरू हुई हैं। लेकिन इनमें पढ़ने का कोई मज़ा नहीं आ रहा है। खैर, इस मुश्किल दौर में हमें पढ़ाई को नहीं छोड़ना है, चाहे फिर तरीका कोई भी क्यों न हो।

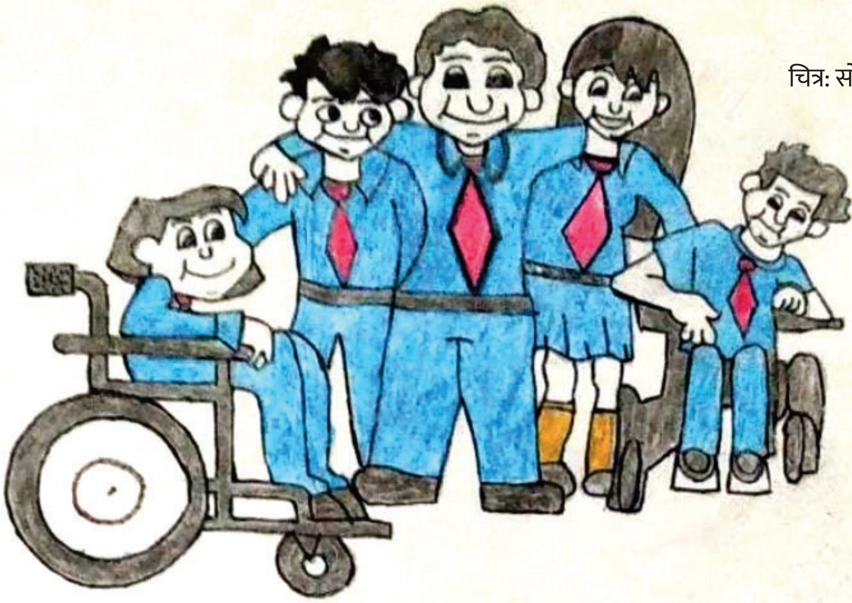
इस लॉकडाउन में मैंने बहुत-सी खाने की चीज़ें बनाना सीखा। हमने मिलकर पिज़्ज़ा, लड्डू, बेसन की बर्फी, गोलगप्पे तथा और भी कई चीजें बनाईं। मैं अब चाय भी बना लेती हूँ। यह मुझे मम्मा ने सिखाया है। मेरी चाय मम्मा, पापा और मेरे दादा को बहुत पसन्द है। जब वे मेरी बनी चाय की तारीफ करते हैं तो मुझे बहुत खुशी मिलती है। इस लॉकडाउन में मैंने वाटर कलर पेंटिंग भी खूब बनाई हैं।

हमारे यहाँ काफी गिलहरियाँ होती हैं। मैं पिछले दिनों पापा से ज़िद करती रही कि मेरे लिए एक गिलहरी पकड़ें। पापा हमेशा मुझे समझाते रहे कि बेटा इनको कैद करना सही नहीं है। परन्तु मैं नहीं मान रही थी। फिर एक दिन जब पापा ने गिलहरी वाली अपनी आपबीती सुनाई तो मैंने अपनी ज़िद छोड़ दी।

एक मज़ेदार बात और! हुआ यूँ कि गिलहरी अभी भी मेरे मन से गई नहीं थी। एक रात मुझे सपना आया। सपने में एक गिलहरी मुझसे मिलने आई थी। मैंने उस रात उससे खूब सारी बातें कीं। जब मैंने यह सपना घरवालों को सुनाया तो वे सारे मुझ पर हँसने लगे कि गिलहरी कैसे बात कर सकती है? लेकिन भई! मैंने तो गिलहरी से बात की है। चाहे सपने में ही क्यों ना सही! मुझे यह सपना कभी नहीं भूलेगा।

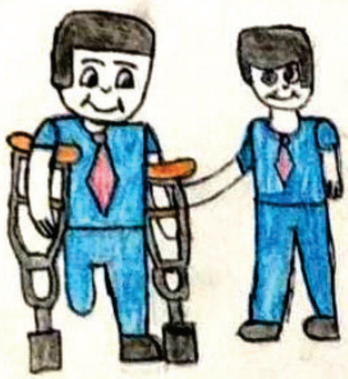
मेरा पन्ना

लॉकडाउन में जब काफी ढील मिली तो एक दिन हम भाई-बहन मम्मा-पापा के साथ जंगल की ओर निकल पड़े। उस दिन हमने जंगल से खूब काफल तोड़े और खाए भी। हमने पीले आखे भी मज़े लेकर खाए। जब हमें भूख लगी तो हमने जंगल में ही पेड़ों के बीच बैठकर खाना खाया। यह मुझे इतना अच्छा लगा कि मैं आपको बता नहीं सकती। जब पानी खतम



चित्र: सोनम झा, विश्वास स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा





हुआ तो पापा पहाड़ी के नालु से पानी लेकर आए। जब हमने उसे पिया तो मैं सोचने लगी कि हमने घरों में फ्रिज क्यों रखे हैं! इतना ठण्डा पानी था वह। पापा का तो गला ही जाम हो गया था।

लॉकडाउन में एक दिन जब मैं और भैया अपने पेड़ से लुकाठ निकाल रहे थे तो हमने देखा कि पत्तों के बीच में घुघ्घी का घोंसला था। मैंने घुघ्घी का घोंसला पहली बार देखा था। वहाँ दो अण्डे थे। हम वहाँ से चुपचाप नीचे उतर आए ताकि अण्डों को कोई नुकसान न पहुँचे। हम कुछ दिनों तक उन अण्डों के फूटने का इन्तजार करते रहे। लेकिन एक सुबह हमने देखा कि दोनों अण्डे ज़मीन पर गिरे हुए थे। घुघ्घी खूब शोर मचा रही थी। यह देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। उस रात खूब ज़ोर की हवा भी चली थी। शायद इस कारण वे गिरे थे या कोई और कारण रहा होगा, नहीं पता। लेकिन यह सही नहीं हुआ। उस दिन मेरा कुछ भी खाने का मन नहीं किया।

बातें बहुत सारी हैं। लेकिन वे फिर कभी।

साइकिल का सफर

फायज़ा मंसूरी
नौवीं
स्कॉलर्स एकेडमी, देवास
मध्य प्रदेश

बात तब की है जब मैं सात या आठ साल की थी। मेरे घर में मेरे दादा जी ने ही सब बच्चों को साइकिल चलाना सिखाया था। मेरे बड़े भाई को, मेरी बड़ी बहन को और अब वे मुझसे कहने लगे कि चल तुझे भी साइकिल चलाना सिखा दूँ। मैंने कहा, "नहीं, मुझे डर लगता है। मैं गिर गई ना तो जितनी हड्डी है वह भी टूट जाएगी।" पर उन्होंने कहा, "मैं हूँ ना, तो फिक्र क्यों करती है।"

दादा जी के इतने बोलने पर मैं भी मान गई! अगले दिन दादा जी ने मुझे पाँच बजे से उठा दिया। फिर ले गए सड़क पर। तब उन्होंने कहा, "चल चला साइकिल।" मैंने सोचा कि यह तो बड़े आराम-से चला लूँगी। बस फिर बैठ गई मैं साइकिल पर। दादा जी ने हैंडल पकड़ा और पीछे-से साइकिल पकड़ी। बड़े आराम-से मैंने पैडल मारा और साइकिल चल पड़ी। धीरे-से दादा जी ने साइकिल का हैंडल छोड़ा। फिर भी मुझे लगा कि उन्होंने साइकिल पकड़ी है। पर नहीं, उन्होंने साइकिल नहीं पकड़ी थी। मैं ज़ोर-से चिल्लाई, "दादा जी पकड़ो। मैं गिर जाऊँगी।" उन्होंने साइकिल पकड़ ली। मैंने तो साइकिल रोकी और सीधा घर में भागी। दादा जी बोले, "इतने में ही डर गई। आगे क्या होगा।"

अगले दिन फिर उन्होंने उठा दिया सुबह से। उस दिन साइकिल थोड़ी ठीकठाक चली थी। चार-पाँच दिन में मुझे साइकिल चलाना आ गया। पर फिर भी एक परेशानी थी। साइकिल तो मैं चला लेती थी पर जब ब्रेक मारने की बारी आती तो डर जाती थी। तो जब भी आसपास कहीं कार रखी होती तो मैं तो उसके सहारे से साइकिल टिकाकर खुद उतर जाती थी। पर बेचारी साइकिल गिर जाती थी। यही चीज़ मैंने बहुत टाइम तक की। पर लॉकडाउन में मैंने इस डर पर भी काबू पा लिया।

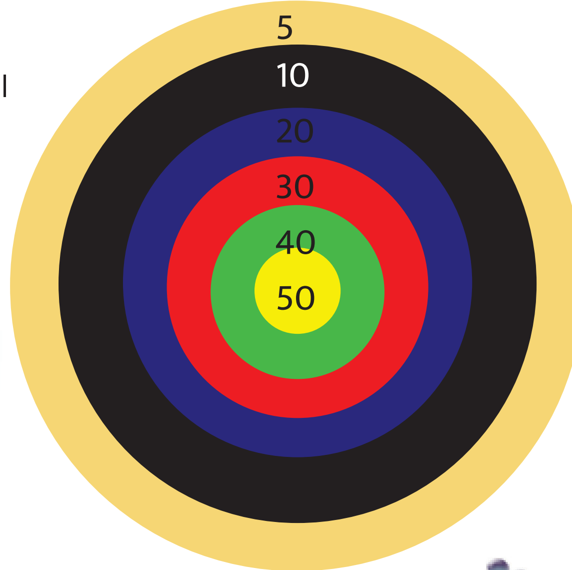
मैंने जब से साइकिल सीखी तब से मैं आज तक नहीं गिरी थी। बहुत सँभलकर चलाती थी मैं साइकिल। लेकिन जब मैंने साइकिल से स्कूल जाना शुरू किया तब एक दिन मैं सिविल लाइन थाने के सामने गिर गई। सामने से बाइक आ गई और साइड में गड्ढा। अब जाऊँ तो कहाँ जाऊँ। तो सीधा गाड़ी में ही जा गिरी। गिरने के एक मिनट बाद मानो जैसे मेरे साथ कुछ अजीब-सा ही हो गया। मुझे तो दिखना और सुनाई देना ही बन्द हो गया। मैं बहुत घबरा गई थी। ऊपर से वो गाड़ी वाला भी मुझे डाँटने लगा। फिर मैं जैसे-तैसे स्कूल पहुँची।

मेरा पन्ना



चित्र: मुनीबा आफिया, छठवीं, माउंट कार्मल स्कूल, दिल्ली

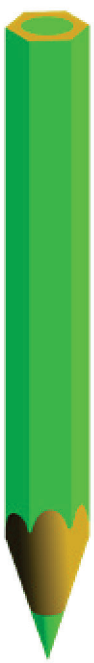
1. चित्र में दिए गए हरेक रिंग पर कुछ पॉइंट लिखे हैं। अगर हरेक रिंग पर केवल एक ही बार निशाना लगा सकते हों, तो 85 पॉइंट पाने के लिए कम से कम कितनी बार निशाना लगाना होगा?



2. अयान के पास 24 भेड़ हैं। उनमें से 17 को छोड़कर बाकी सारी मर गईं। तो अयान के पास कितनी भेड़ बचीं?

3. एक पैंट-शर्ट की कीमत 400 रुपए है। अगर पैंट की कीमत शर्ट से 100 रुपए अधिक हो तो सिर्फ शर्ट की कीमत क्या होगी?

4. एक फोटो को देखते हुए अर्शी बोली, "यह मेरे पापा की बेटी की फोटो है। पर मेरी कोई बहन नहीं है।" अर्शी झूठ नहीं बोल रही थी। तो फिर अर्शी किसकी फोटो देख रही थी?



5. एक पेंसिल को ज़मीन पर इस तरह खड़ा करना है कि कोई भी उसके ऊपर से कूद ना सके। कैसे कर सकते हैं?

6. दी गई ग्रिड में कुछ शहरों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

दि	ल्ली	ले	ह	री	वा	नी	ज	अ
दे	ब	स्त	र	ची	सि	ल	च	ज
ह	आ	ज	म	ग	ढ़	वा	ल	नी
रा	ण	क	नौ	गाँ	व	टि	पु	ढ़
दु	द	छु	ट	र	मं	द	सौं	र
न	सू	र	त	क	व	री	स	ण
हि	अ	भो	पा	ल	का	न	पु	थ
आ	रा	नै	नी	ता	ल	पु	णे	म्बौं
क	च्छ	ण	ब	या	का	र	री	र

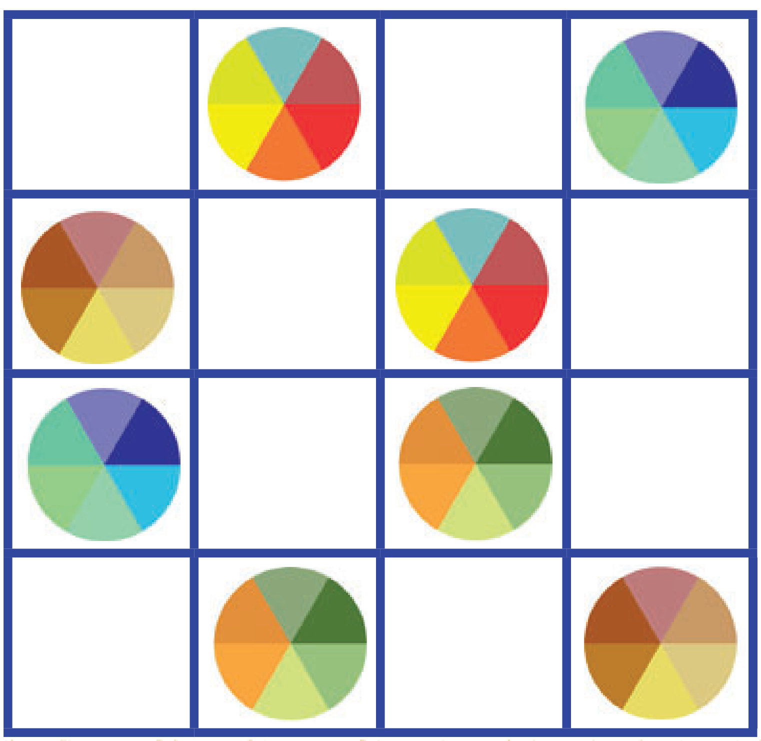


7.

इस चित्र में एक मधुमक्खी छुपी है। क्या तुम उसे ढूँढ सकते हो?

8.

दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग गेंद होनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी गेंद आएँगी?



फटाफट बताओ

क्या है जिसके पास रात में तो सिर होता है, पर सुबह वो सिर गायब हो जाता है?

(तकिया)

मेरा कोई भार नहीं है।
मगर मैं भारी से भारी
बालटी का भार कम कर
सकता हूँ। मैं कौन हूँ?

(छेद)

अपने काम की बड़ी सयानी,
पेट में रखती काला पानी

(कलम)

मैं हमेशा तुम्हारे सामने होता हूँ पर दिखता नहीं हूँ। मैं कौन हूँ?

(भविष्य)

आना-जाना उसको भाए,
जिस घर जाए टुकड़े कर आए!

(कैंची)



1		2		■	■	3		4
	■		■	5			■	
	■	6	7		■	8	9	
■	10	■	11		12	■		■
■	13	14		■	15	16		17
18			■	19	■		■	
	■		■	20			■	
21	22	■	23		■	24	25	
■	26			■	27			■

सुडोकू 56

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

6	3				4	5	1	
8			3			2	4	
	7			8	5		3	9
		3	8	7			2	
5	2				6			1
	4		5	9	2	3		
	9		6			1	8	
	1				8			
		6	2	1	7	9		



माथापच्ची जवाब

1. तीन बार। यदि तुम पीले, लाल व सफेद रंग के रिंग पर निशाना लगाओ तो तीन बार में 85 पाइंट पा सकते हो।

2. 17 को छोड़कर बाकी सारी मर गईं तो ज़ाहिर है कि 17 ही बचेंगी।

3. मान लो कि शर्ट की कीमत x रुपए है।
दिया है कि पैंट की कीमत शर्ट की कीमत से 100 रुपए अधिक है
तो पैंट की कीमत हुई x+100
शर्ट-पैंट दोनों की कुल कीमत 400 रुपए हैं, तो $x+x+100 = 400$
यानी कि $x = 150$, तो शर्ट की कीमत हुई 150 रुपए।

4. खुद का फोटो।

5. पेंसिल को दीवार से सटाकर खड़ा करो तो कोई उसके ऊपर से कूद नहीं पाएगा।

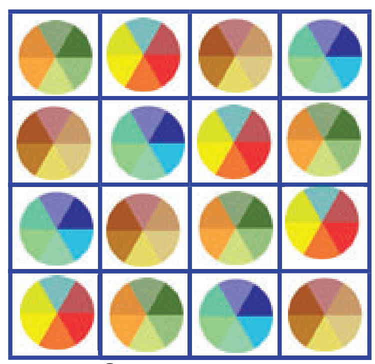
6.

दि	ल्ली	ले	ह	री	वा	नी	ज	अ
दे	ब	स्त	र	ची	सि	ल	च	ज
ह	आ	ज	म	ग	ढ़	वा	ल	नी
रा	ण	क	नौ	गाँ	व	टि	पु	ढ़
दु	द	छु	ट	र	मं	द	सौ	र
न	सू	र	त	क	व	का	स	ण
हि	अ	भो	पा	ल	का	न	पु	थ
आ	रा	नै	नी	ता	ल	पु	णे	म्बौ
क	च्छ	ण	ब	या	का	र	री	र

7.



8.



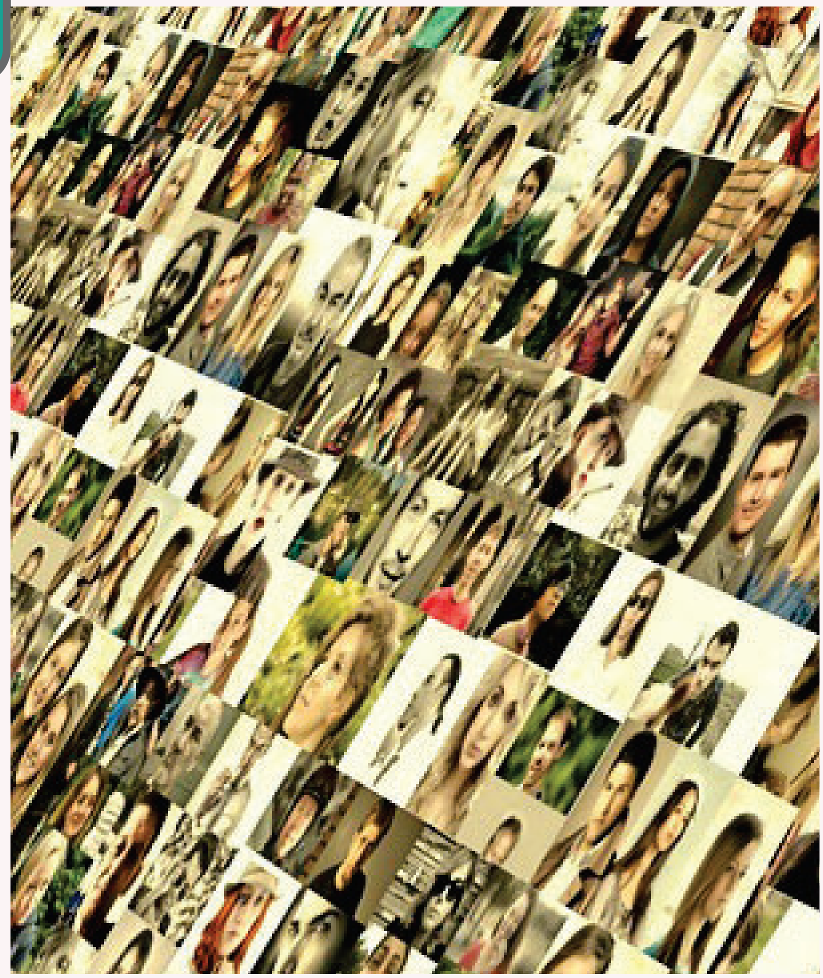
जुलाई की चित्रपहेली का जवाब

	1 खि	लौ	2 ना		3 ए	4 क		
5 पे	ड		रि			6 प	त्रि	7 का
	की		य		8 घ	ड़ा		फ
9 कि		10 रे	ल	11 गा	ड़ी		12 स्टॉ	ल
13 सा	मा	न		ई		14 कु		
न		को			15 जा	ली	दा	16 र
	17 प्ले	ट	18 फा	र्म				स्सी
19 बो			ट		20 बैं		21 बु	
22 झ	ण्डी		क		23 च	बू	त	रा

सुडोकू-55 का जवाब

1	6	5	2	8	3	4	7	9
9	8	2	4	7	1	5	3	6
7	4	3	9	6	5	1	2	8
8	7	4	3	2	6	9	5	1
5	1	9	7	4	8	3	6	2
3	2	6	1	5	9	8	4	7
2	3	8	6	9	4	7	1	5
4	5	7	8	1	2	6	9	3
6	9	1	5	3	7	2	8	4

तुम भी जानो



अब चीन से भी ज़्यादा हमारी आबादी

हर साल 11 जुलाई को विश्व आबादी दिवस मनाया जाता है। इस साल नवम्बर तक पृथ्वी पर 800 करोड़ लोग हो जाएँगे। और अगले साल तक भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा।

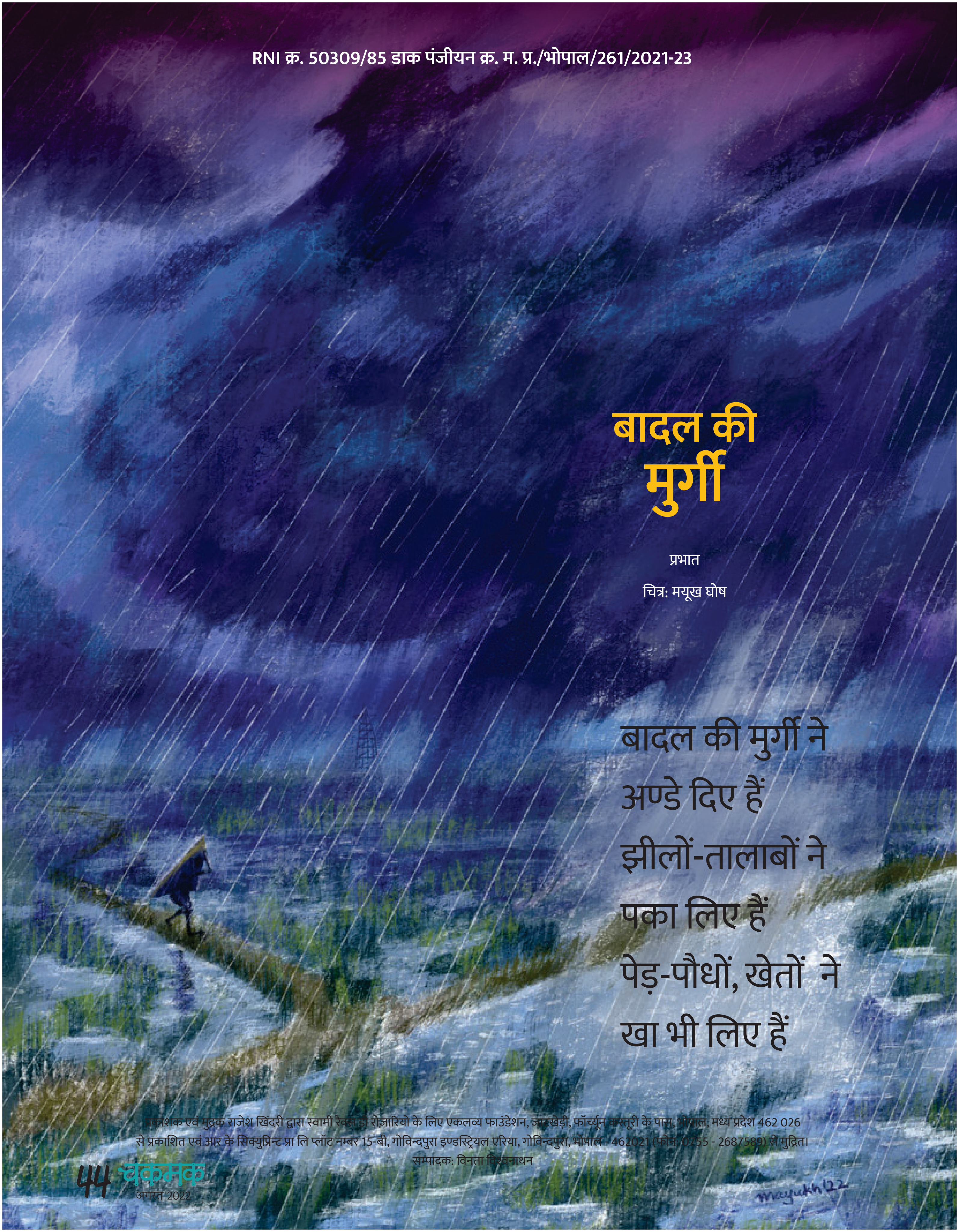
लोग पहले से कम बच्चे पैदा कर रहे हैं लेकिन चूँकि इतने ज़्यादा लोग हैं, ज़्यादा लम्बे समय तक जी रहे हैं और कम मर रहे हैं। इसलिए आबादी फिर भी बढ़ती जा रही है। हमारी आबादी का एक चौथाई हिस्सा बच्चे हैं और इससे भी कम बुज़ुर्ग हैं। लगभग तीन-चौथाई आबादी काम करने के काबिल लोगों की है। ऐसे में एक बड़ी चुनौती है सब को रोज़गार दिलाना।

महँगाई का एक सूचक - चिकन करी



बढ़ती महँगाई को समझने के लिए ट्रूबेर्ड कम्पनी ने 2017 में एक सूचक तैयार किया - चिकन करी इन्डैक्स। एक किलो पंजाबी चिकन करी बनाने के लिए चिकन, प्याज़, टमाटर, अदरक, लहसुन, तेल और गैस की जितनी ज़रूरत पड़ती है उनके दामों को जोड़कर ये सूचक तय होता है। 2017 में यह 300 रुपए था और आज ये 485 रुपए है। शाकाहारियों के लिए पनीर मसाला इन्डैक्स बना है। और दोनों की तुलना से समझ में आता है कि मांसाहारियों (जो देश के लगभग 75 प्रतिशत लोग हैं) के लिए महँगाई कुछ ज़्यादा ही बढ़ी है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23



बादल की मुर्गी

प्रभात

चित्र: मयूख घोष

बादल की मुर्गी ने
अण्डे दिए हैं
झीलों-तालाबों ने
पका लिए हैं
पेड़-पौधों, खेतों ने
खा भी लिए हैं

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन